

Kya Hai Non Cooperation Movement in Hindi

Non-Cooperation Movement (असहयोग आंदोलन) 1920 में 5 सितंबर को शुरू किया गया था। इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था और ब्रिटिश उत्पादों के उपयोग को समाप्त करने, ब्रिटिश पदों से इस्तीफा लेने या इस्तीफा देने, सरकारी नियमों, अदालतों आदि पर रोक लगाने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। यह आंदोलन अहिंसक था और जलियांवाला के बाद देश के सहयोग को वापस लेने के लिए शुरू किया गया था बाग हत्याकांड और रौलट एक्ट। महात्मा गांधी ने कहा कि यदि यह आंदोलन सफल रहा तो भारत एक वर्ष के भीतर स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। यह एक जन आंदोलन के लिए व्यक्तियों का संक्रमण था। असहयोग को पूर्ण स्वराज पाने के लिए भी ध्यान केंद्रित किया गया जिसे पूर्ण स्वराज भी कहा जाता है।

असहयोग आंदोलन अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ 1 अगस्त 1920 को गांधी जी द्वारा शुरू किया गया सत्याग्रह आंदोलन है। यह अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित अन्यायपूर्ण कानूनों और कार्यों के विरोध में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन था। इस आंदोलन में, यह स्पष्ट किया गया था कि स्वराज अंतिम उद्देश्य है। लोगों ने ब्रिटिश सामान खरीदने से इनकार कर दिया और दस्तकारी के सामान के उपयोग को प्रोत्साहित किया।

असहयोग आंदोलन के उद्देश्य

असहयोग आंदोलन अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ 1 अगस्त 1920 को गांधी जी द्वारा शुरू किया गया सत्याग्रह आंदोलन है। यह अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित अन्यायपूर्ण कानूनों और कार्यों के विरोध में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन था। इस आंदोलन में, यह स्पष्ट किया गया था कि स्वराज अंतिम उद्देश्य है। लोगों ने ब्रिटिश सामान खरीदने से इनकार कर दिया और दस्तकारी के सामान के उपयोग को प्रोत्साहित किया।

Non-Cooperation Movement Timeline (असहयोग आंदोलन समयरेखा)

Non-Cooperation Movement की घटना	तारीख
रौलट एक्ट	1918
खलीफा तुर्की में युद्ध हार गया	1919
Non-Cooperation Movement की आधिकारिक प्रतिबद्धता	अगस्त 1920

कोलकाता में Non-Cooperation Movement का लेआउट और उद्देश्य	सितंबर 1920
नागपुर में 15 कांग्रेस समिति से नेतृत्व का गठन	दिसंबर 1920
चौरी चौरा हादसा	5 फरवरी 1922
महात्मा गांधी ने गिरफ्तार किया और सजा सुनाई	मार्च 1922
सीआर दास और मोतीलाल नेहरू द्वारा गठित स्वराज पार्टी	1 जनवरी 1923

असहयोग आंदोलन की विशेषताएं

Non-Cooperation Movement (असहयोग आंदोलन) प्रमुख रूप से दो पहलुओं पर आधारित था, संघर्ष और आचरण के नियम। इसकी कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- उनके शीर्षकों और उल्लेखनीय पदों से त्याग
- गैर-सहयोग आंदोलन ने भारत में निर्मित वस्तुओं और उत्पादों के उपयोग और विनिर्माण को आगे बढ़ाया और ब्रिटिश उत्पादों के उपयोग को और अधिक बढ़ावा दिया।
- Non-Cooperation Movement की सबसे आवश्यक विशेषता ब्रिटिश नियमों के खिलाफ लड़ने के लिए अहिंसक और शांतिपूर्ण का पालन करना था।
- भारतीयों को विधान परिषद के चुनावों में भाग लेने से मना करने के लिए कहा गया था।
- ब्रिटिश शिक्षा संस्थानों को प्रतिबंधित और वापस लेना

Causes of Non Cooperation Movement in Hindi

Non-cooperation Movement की स्थापना से पहले पिछले वर्षों में हुए Non-cooperation Movement को शुरू करने के पीछे सिर्फ एक कारण नहीं था। इस आंदोलन के कुछ महत्वपूर्ण कारण इस प्रकार हैं:

- विश्व युद्ध 1 – विश्व युद्ध के दौरान 1 भारतीय सैनिक ब्रिटिश पक्ष से लड़े और भारतीय समर्थन के लिए एक टोकन के रूप में, ब्रिटिश भारत की स्वतंत्रता के रूप में एहसान वापस कर सकते हैं। लगभग 74,000 सैनिकों की बलि दी गई और बदले में, कुछ भी नहीं दिया गया।
- किफायती मुद्दे – प्रथम विश्व युद्ध के बाद, पूरे भारत में कई आर्थिक मुद्दे थे। हर उत्पाद की कीमत बढ़ रही थी और दूसरी तरफ, किसानों को अपने कृषि उत्पादों के लिए आवश्यक मजदूरी नहीं मिल पा रही थी, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार के प्रति नाराजगी थी।
- रौलट एक्ट – रौलट एक्ट ने भारतीयों की स्वतंत्रता को दूसरे स्तर पर नकार दिया। इस अधिनियम के अनुसार, ब्रिटिश किसी को भी गिरफ्तार कर सकते हैं और उन्हें उचित परीक्षण के अधिकार के बिना जेल में रख सकते हैं। इसने Non-cooperation Movement के प्रमुख कारणों में से एक को जन्म दिया।
- जलियाँवाला बाग हादसा – 13 अप्रैल 1919 को हुआ जलियाँवाला बाग नरसंहार, हर भारतीय में रोष और आग भर देने वाली घटना थी, जो ब्रिटिश सरकार में सबसे कम विश्वास था। इस नरसंहार में, ब्रिगेडियर-जनरल रेजिनाल्ड डायर के आदेश से 379 लोग मारे गए और 1200 घायल निहत्थे नागरिकों को नुकसान पहुँचाया गया
- खिलाफत आंदोलन – उस समय मुसलमानों का धार्मिक प्रमुख टर्की का सुल्तान माना जाता था। प्रथम विश्व युद्ध में जब टर्की को अंग्रेजों ने हराया था, मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली, मौलाना आजाद, हकीम अजमल खान और हसरत मोहानी के नेतृत्व में खिलाफत आंदोलन के रूप में एक समिति का गठन किया गया था। इस आंदोलन ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता का कार्य किया क्योंकि खिलाफत आंदोलन के नेता Non-cooperation Movement में शामिल हो गए।

Non-Cooperation Movement (असहयोग आंदोलन) का निलंबन

Non-Cooperation Movement स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े आंदोलनों में से एक था। सभी प्रयासों के बावजूद, यह एक सफलता थी और कुछ कारणों के कारण, इसे निलंबित कर दिया गया था।

- उत्तर प्रदेश में वर्ष 1922 फरवरी में, किसानों के एक हिंसक समूह ने पुलिस स्टेशन में आग लगा दी और 22 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी।
- गैर-सांकेतिक आंदोलन अहिंसक या शांतिपूर्ण था लेकिन कुछ हिस्सों में, आंदोलन हिंसक आक्रोश और विरोध में बदल गया।
- गांधी जी ने सीआर दास, मोतीलाल नेहरू और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे नेताओं की आलोचना करते हुए कहा कि भारत अहिंसक आंदोलन के लिए तैयार नहीं था।

Non-Cooperation Movement का प्रभाव

भले ही Non-Cooperation Movement (असहयोग आंदोलन) सफल नहीं था लेकिन इसने कुछ प्रभाव छोड़ दिए। यहाँ इस आंदोलन के सभी प्रभाव हैं:

- इस आंदोलन ने लोगों में ब्रिटिश विरोधी भावना विकसित की जिसके कारण लोग ब्रिटिश शासन और नेताओं से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहे थे
- जब खिलाफत आंदोलन को Non-Cooperation Movement में मिला दिया गया, तो इससे हिंदुओं और मुसलमानों में एकता आई।

- ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार और खादी उत्पादों का प्रचार
- यह पहला आंदोलन था जिसमें बड़े पैमाने पर लोगों ने भाग लिया, इसने विभिन्न श्रेणियों के लोगों जैसे किसानों, व्यापारियों आदि को विरोध में एक साथ लाया।

असहयोग आंदोलन कब और क्यों वापस लिया गया

चौरीचौरा, उत्तर प्रदेश में गोरखपुर के पास का एक कस्बा है जहां 4 फरवरी 1922 को भारतीयों ने ब्रिटिश सरकार की हिंसक कार्रवाई के बदले में एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी थी. इससे उसमें छुपे हुए 22 पुलिस कर्मचारी जिन्दा जलकर मर गए थे.

चौरी चौरा कांड

इस घटना को इतिहास के पन्नों में चौरी चौरा कांड से के नाम से जाना जाता है। इस कांड का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर बड़ा असर पड़ा. इसी कांड के बाद महात्मा गांधी काफी परेशान हो गए थे. इस हिंसक घटना के बाद गांधी जी ने अपना जोर शेर से चल रहे आंदोलन असहयोग आंदोलन वापिस ले लिया।

असहयोग आंदोलन का प्रसार

- अली बंधुओं और महात्मा गांधी ने राष्ट्रव्यापी छात्र और राजनीतिक कार्यकर्ता रैलियों और सभाओं का आयोजन किया। 800 से अधिक राष्ट्रीय स्कूलों और कॉलेजों में दाखिला लेने के लिए हजारों छात्रों ने औपनिवेशिक स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ दिया
- बंगाल में अकादमिक बहिष्कार प्रमुख था। सीआर दास ने इसे बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सुभाष बोस ने कलकत्ता राष्ट्रीय कांग्रेस का नेतृत्व किया। यह पंजाब में भी सफल रहा, जहां लाला लाजपत राय ने प्रमुख भूमिका निभाई
- सीआर दास, मोतीलाल नेहरू, सैफुद्दीन किचलू और एमआर जयकर जैसे वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया।
- बंगाल के मिदनापुर जिले में यूनियन बोर्ड करों के खिलाफ एक अभियान शुरू किया गया था। चिराला के पिराला और पेदानंदीपाडु तालुका में आंध्र जिले के गुंटूर में भी कर-मुक्त आंदोलन उभरा
- उत्तर प्रदेश में एक शक्तिशाली किसान सभा आंदोलन उभर रहा था। जवाहरलाल नेहरू असहयोग आंदोलन के नेता थे
- केरल के मालाबार क्षेत्र में, असहयोग और खिलाफत प्रचार ने मुस्लिम किरायेदारों, जिन्हें मोपला कहा जाता है, को उनके किराएदारों के खिलाफ जगाया।
- असम में चाय बागान मजदूरों ने हड़ताल का आह्वान किया।
- आंध्र ने वन कानूनों की अवहेलना की
- पंजाब में अकाली आंदोलन भ्रष्ट महंतों (पुजारियों) से गुरुद्वारों के नियंत्रण का विरोध करने के लिए असहयोग आंदोलन का हिस्सा था।

असहयोग आंदोलन से जुड़े व्यक्तित्व

असहयोग आंदोलन कई नेताओं और आम लोगों को भी एक साथ लाया। असहयोग आंदोलन में हिंदुओं और मुसलमानों को फिर से मिला दिया गया। असहयोग आंदोलन से जुड़े कुछ अन्य नेता और व्यक्तित्व थे:

- बसंती देबी
- जितेन्द्रलाल बनर्जी
- सुभाष चंद्र बोस
- मौलाना मोहम्मद अली
- मौलाना शौकत अली
- मोतीलाल नेहरू
- लाला लाजपत राय
- राजेन्द्र प्रसाद
- सरदार वल्लभभाई पटेल
- एमएन राय

असहयोग आंदोलन स्थगित

असहयोग आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े आंदोलनों में से एक था। तमाम कोशिशों के बाद भी यह सफल रही और कुछ कारणों से इसे स्थगित कर दिया गया।

- उत्तर प्रदेश में फरवरी 1922 में, किसानों के एक हिंसक समूह ने थाने में आग लगा दी और 22 पुलिसकर्मियों की हत्या कर दी।
- असहयोग आंदोलन अहिंसक या शांतिपूर्ण था लेकिन कुछ हिस्सों में यह आंदोलन हिंसक आक्रोश और विरोध में बदल गया।
- सीआर दास, मोतीलाल नेहरू और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे नेताओं ने गांधी जी की आलोचना करते हुए कहा कि भारत अहिंसक आंदोलन के लिए तैयार नहीं है।

यूपीएससी के लिए असहयोग आंदोलन के बारे में तथ्य

UPSC 2021 के उम्मीदवारों को असहयोग आंदोलन के बारे में नीचे दिए गए बिंदुओं को जानना चाहिए:

व्यक्तित्व संबद्ध	असहयोग आंदोलन में भूमिका
महात्मा गांधी	-वह आंदोलन के पीछे मुख्य ताकत थे-1920 में, घोषणापत्र की घोषणा की

सीआर दास	-कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन, नागपुर (1920) में असहयोग पर मुख्य प्रस्ताव पेश किया- उनके तीन अधीनस्थों, मिदनापुर में बीरेंद्रनाथ संसल, कलकत्ता में सुभाष बोस और चटगांव में जेएम सेनगुप्ता ने हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
जवाहर लाल नेहरू	-किसान सभाओं के गठन का समर्थन किया और आंदोलन को वापस लेने के गांधीजी के फैसले के खिलाफ था
सुभाष चंद्र बोस	- प्रतिरोध के संकेत के रूप में सिविल सेवा से इस्तीफा दिया -कलकत्ता में नेशनल कॉलेज के प्रिंसिपल के रूप में नामित
अली बंधु (शौकत अली और मुहम्मद अली)	-अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन में, मोहम्मद अली ने घोषणा की कि 'मुसलमानों के लिए ब्रिटिश सेना में बने रहना धार्मिक रूप से गैरकानूनी था।'
मोतीलाल नेहरू	अपने कानूनी अभ्यास को त्याग दिया
लाला लाजपत राय	-शुरुआत में उन्होंने आंदोलन का समर्थन नहीं किया- बाद में वे इसे वापस लेने के खिलाफ थे
सरदार वल्लभ भाई पटेल	-गुजरात में अभियान का विस्तार किया

असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन

सविनय अवज्ञा की शुरुआत महात्मा गांधी के नेतृत्व में हुई थी। यह 1930 में स्वतंत्रता दिवस के पालन के बाद शुरू किया गया था। सविनय अवज्ञा आंदोलन कुख्यात दांडी मार्च के साथ शुरू हुआ जब गांधी 12 मार्च 1930 को आश्रम के 78 अन्य सदस्यों के साथ अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से पैदल चलकर दांडी के लिए निकले। दांडी पहुंचने के बाद, गांधी ने नमक कानून तोड़ा। नमक बनाना अवैध माना जाता था क्योंकि इस पर पूरी तरह से सरकारी एकाधिकार था। नमक सत्याग्रह देश भर में सविनय अवज्ञा

आंदोलन को एक व्यापक स्वीकृति के लिए नेतृत्व किया। यह घटना लोगों की सरकार की नीतियों की अवहेलना का प्रतीक बन गई। अधिक जानने के लिए, सविनय अवज्ञा आंदोलन पर हमारा ब्लॉग पढ़ें

Khilafat and Non Cooperation Movement in Hindi

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान भारत में ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए शुरू किए गए दो आंदोलन खिलाफत और असहयोग आंदोलन थे। दोनों आंदोलनों ने अहिंसा कृत्यों का पालन किया। जबकि आंदोलनों के पीछे कई कारण थे, खिलाफत आंदोलन के पीछे एक प्रमुख कारण यह था कि जब मुसलमानों के धार्मिक प्रमुख जो तुर्की के सुल्तान थे, को अंग्रेजों द्वारा मार दिया गया था। खिलाफत आंदोलन का नेतृत्व मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली, मौलाना आजाद, हकीम अजमल खान और हसरत मोहानी ने किया। इस आंदोलन ने हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट किया क्योंकि खिलाफत आंदोलन के नेता असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए।

भारत छोड़ो आंदोलन

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू होने के मुख्य कारण के रूप में यह शक्तिशाली भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों में से एक बन गया:

- क्रिप्स प्रस्ताव की विफलता भारतीयों के लिए जागृति का आह्वान बन गई
- विश्व युद्ध द्वारा लाई गई कठिनाइयों से आम जनता का असंतोष

पूछे जाने वाले प्रश्न

रौलट एक्ट क्या है?

रौलट एक्ट इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल द्वारा पारित एक ऐसा अधिनियम था जिसमें कहा गया था कि किसी व्यक्ति को परीक्षण या न्यायिक समीक्षा के बिना कैद किया जा सकता है।

खिलाफत आंदोलन से जुड़े अली ब्रदर्स का क्या नाम था?

मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली खिलाफत आंदोलन से जुड़े अली ब्रदर्स हैं।

क्या असहयोग आंदोलन में महात्मा गांधी को गिरफ्तार किया गया था?

हां, असहयोग आंदोलन में महात्मा गांधी को गिरफ्तार किया गया था और 6 साल की सजा सुनाई गई थी।

असहयोग आंदोलन में प्रमुख नेताओं के नाम क्या हैं?

लाला लाजपत राय, मोतीलाल नेहरा, सीआर दास और महात्मा गांधी Non Cooperation Movement से जुड़े प्रमुख नेता हैं।

असहयोग आंदोलन क्यों रोका या भंग किया गया था?

चौरी चौरा की घटना के बाद जिसमें 22 पुलिसकर्मी हिंसक भीड़ द्वारा मारे गए, महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को भंग करने का फैसला किया।

असहयोग आंदोलन की अवधि क्या थी?

असहयोग आंदोलन 1920 में शुरू किया गया था और 1922 में समाप्त हुआ था।